समांतरवाद - स्पिनोजा

मन-शरीर / आत्मा- शरीर के बीच संबंध

भूमिका

पाश्चात्य दर्शन में आधुनिक युग का प्रारंभ बुद्धिवादी दार्शनिकों से प्रारंभ होता है। अपने स्वतंत्र चिंतन के पश्चात् बुद्धिवादी दार्शनिक डेकार्ट ने ईश्वर को निरपेक्ष तत्व और मन तथा शरीर को सापेक्ष तत्व पाया। मन और शरीर अपनी सत्ता के लिए एक दूसरे पर निर्भर नहीं है, दोनों के गुण भी एक दूसरे से नितांत भिन्न हैं लेकिन उनके बीच एक सह-संबंध व्यावहारिक जीवन में दिखाई देता है। यह एक विरोधाभास है। जो एक समस्या के रूप में बुद्धिवादी दार्शनिक के समक्ष प्रस्तुत है। इस समस्या पर देकार्त के विचार को क्रिया - प्रतिक्रियावाद, उनके अनुयायी के सिद्धांत को अवसरवाद, स्पिनोजा के मत को समांतरवाद तथा लाइबनित्स के मत को पूर्व-स्थापित सामंजस्यवाद कहा जाता है।

डेकार्ट का मत -

डेकार्ट के अनुसार मन और शरीर एक-दूसरे के विरोधी गुण रखने वाले सापेक्ष द्रव्य हैं। ~~इनके बीच~~ मस्तिष्क में स्थित पीनियल ग्रंथि के माध्यम से परस्पर मन और शरीर क्रिया प्रतिक्रिया करते हैं और एक दूसरे को प्रभावित भी करते हैं।

Scanned with CamScanner

मन क्रिया-प्रतिक्रिया में ईश्वर का भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

स्पिनोजा द्वारा डेकार्ट की आलोचना :- ① स्पिनोजा के अनुसार डेकार्ट ने मन-और शरीर को द्रव्य मानकर भारी भूल किया यह दोनों द्रव्य नहीं है द्रव्य एकमात्र ईश्वर है। मन-शरीर, ईश्वर के दो गुण मात्र है। ② डेकार्ट ने मन और शरीर को इतना भिन्न मान लिया कि वह न तो इनके संयोग का और न ही मन का ही कोई कारण बता सके ③ आत्मा जो स्थान ही नहीं घेरती वह पीनीयल ग्रंथि तक पहुँचती कैसे है। ④ सम्यक् व्याख्या के अभाव में डेकार्ट अन्त में ईश्वर का शरण ले लेता है।

* मन-शरीर-संबंधी स्पिनोजा का मत :- डेकार्ट मन और शरीर को दो स्वतंत्र तथा एक-दूसरे के विरोधी गुणों से युक्त द्रव्य कहा था इसके विपरीत स्पिनोजा ने मन और शरीर को ईश्वर में निहित अनन्त गुणों में से दो गुण स्वीकार किया। अतः इन दोनों के मध्य संबंध सूत्र को तलाश करना उनके लिए बड़ी बात नहीं रही। उनके अनुसार मन और शरीर एक दूसरे के विरोधी हो भी नहीं सकते क्योंकि दोनों एक ही आधार से बंधे हुए हैं। दोनों ईश्वर से जुड़े हुए हैं। यह सत्य है कि दोनों दो भिन्न गुण है तथा दोनों एक दूसरे पर प्रभाव नहीं डालते

Scanned with CamScanner

किंतु यह सत्य नहीं है कि दोनों के गुण विरोधी है। दोनों एक ही चश्मे कांच के बहिर्गोल और अंतर्गोल के समान दो पक्ष हैं। भौतिक विश्व और बौद्धिक विश्व में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। एक ही ईश्वर भौतिक विश्व में विस्तार के रूप में और आध्यात्मिक जगत् में विचार के रूप में मौजूद है।

वस्तुतः बाह्य जगत में जो कुछ घटित होता है वह सब मानसिक जगत् में भी घटित होता है। किंतु यह दो अलग-अलग प्रक्रिया नहीं है। प्रक्रिया तो एक ही होती है जो भीतर के विचार और बाहर के विस्तार प्रतीत होती है। जैसे हमारे दिवाल पर एक चित्र है और हमारे मन में भी उसी चित्र का एक विचार है ये दोनों परस्पर विरोधी चीजें नहीं है। दोनों को हम समानान्तर कह सकते हैं। इसी तरह संसार की प्रत्येक भौतिक वस्तु और घटना का एक वैचारिक पहलू होता है।

इस तरह शरीर और आत्मा को परस्पर क्रिया करने की आवश्यकता नहीं है। ~~दोनों समांतर~~ शारीरिक और मानसिक क्रियाएँ गाड़ी के दो पहिए के समान है जो एक ही साथ समांतर रूप से चलते हैं। मन में परिवर्तन के साथ ही

Scanned with CamScanner

शरीर पर और शरीर पर परिवर्तन होने के साथ ही मन पर समांतर रूप से परिवर्तन होते हैं। स्पिनोजा का मन- शरीर संबंधी यह सिद्धांत समांतरवाद के नाम से दर्शन के जगत में विख्यात है।

आलोचना – ① लाइबनित्स के अनुसार एक ही द्रव्य को सित और असित इन दोनों गुणों से युक्त बतलाकर स्पिनोजा वस्तुतः विरोध के नियम का उल्लंघन करता है।

② यदि हम केवल दो गुणों को ही जान सकते हैं तो हम कैसे मानेंगे की ईश्वर अनंत गुणों से युक्त है।

③ विकास का सिद्धांत सिद्ध करता है कि मन का प्रभाव शरीर पर बराबर पड़ता है।

* महत्व :– इन आलोचनाओं के बावजूद स्पिनोजा का मन- शरीर संबंधी सिद्धांत को अस्वीकार नहीं जा सकता। इन्होंने डेकार्ट के क्रिया- प्रतिक्रिया सिद्धांत में विद्यमान विसंगतियों के ओर ध्यान आकृष्ट किया है। ईश्वर को अनंतगुणों से आभूषित किया और विस्तार तथा विचार को उनके अनंत गुणों में से दो गुण माना। मानसिक और भौतिक जगत में साम्य स्थापित करने का सराहनीय प्रयास किया है। इस प्रकार स्पिनोजा समांतरवाद को स्पिनोजा का एक कार्यक प्रयास कहा जा सकता है।

Scanned with CamScanner